

शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप

MODERN FORM OF PRESENTATION OF CLASSICAL MUSIC



Dr. Rahul Swarnkar
Editor



डॉ. राहुल स्वर्णकार ने तबले की प्रारम्भिक शिक्षा श्री विभूति मलिक जी से तथा उच्च शिक्षा पं. राम स्वरूप रतोनिया जी के सानिध्य में ली और भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय की छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। तबला विषय में स्नातकोत्तर की उपाधी खैरागढ़ विश्वविद्यालय छ. ग. से सर्वोच्च अंकों के साथ उस्ताद अहमद जानथिरकवा स्वर्ण पदक एवं सेठ बालकृष्ण रजत पदक प्राप्त कर पूर्ण की। संगीत कोविद संगीत प्रवीण, यू. जी. सी. नेट और बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की है। वर्तमान में आप डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर म.प्र. के संगीत विभाग में तबला विषय के सहायक प्राध्यापक हैं। इसके पहले माधव संगीत महाविद्यालय इन्दौर, उज्जैन तथा नूतन कन्या महाविद्यालय भोपाल म.प्र. में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। केंद्रीय विद्यालय चेन्नई प्रान्त, में संगीत शिक्षक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। आप कई राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित भी कर चुके हैं। संगीत विषयक 20 से अधिक राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में शोधपत्र प्रस्तुत कर चुके हैं। कई पुस्तकों में लेख और संगीत विषय पर पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। अकादमिक गतिविधियों के साथ मंचीय प्रस्तुति में भी समान रूप से सक्रिय हैं। आप अकाशवाणी एवं दूरदर्शन के नियमित एवं 'ए' श्रेणी के कलाकार हैं। देश के कई मंचों के अलावा वर्ष 2018 में फ्रांस के बेल्लफोर्ट में अंतर्राष्ट्रीय फीमो फेस्टिवल में भारत की तरफ से सहभागिता की। वर्ष 2019 में यू. जी. सी. के लिए तालों का सौंदर्य शास्त्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम निर्माण किया। वर्तमान में कई विद्यार्थी आपके सानिध्य में तबला वादन की शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके अलावा आप कई सम्मान भी प्राप्त कर चुके हैं जिनमें ताल मनीषी सम्मान, कला निधि सम्मान, संगीत रत्न सम्मान, ताल साधक सम्मान आदि प्रमुख हैं। कई संस्थानों के परीक्षक के रूप में भी अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

ND Publication

Badhapur East, New Delhi

www.ndpublication.com

Email: ndpublication@gmail.com

ISBN :978-81-966424-4-0



978-81-966424-4-0

सं. क्र.	शीर्षक	लेखक	पेज नं.
	शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप	(प्रो.) लावण्या कीर्ति सिंह 'काव्या'	2-4
	ख्याल गायन प्रस्तुति में निहित भक्तितत्त्व	डॉ. श्रीमती गीताली पांडे	5-7
	सितार वादन शैली पर विभिन्न गायन शैलियों का प्रभाव	डॉ० सुमित्रा देवी चौहान	8-10
	आगरा घराने गायकी की अन्तर्धाराएँ	डॉ. भागवत लहुबुवा ढोले	11-16
	रागमेंनिहितसामान्य एवंविशेष लक्षणों की व्याख्या :- उद्भव एवंविकास	कौशल मेहरा	17-22
	विभिन्न घरानों में प्रस्तुतियों का आधुनिक स्वरूप (कथक नृत्य के विशेष संदर्भ में)	विशाखा तिवारी	23-25
	“मैहर” घराने में वादन प्रस्तुतिकरण	श्रेया सुचेता पटवर्धन डॉ. शितल मोरे	26-32
	तबला स्वतंत्र वादन में आए आधुनिक बदलाव	डॉ. वेणुवनिता	33-36
	शास्त्रीय संगीत का आधुनिक प्रस्तुतिकरण: स्वरूप और प्रभाव	डॉ. मोहिनी शुक्ला	37-41
	संगीत विषय का अन्य विषयों के साथसह-सम्बन्ध	लोकेश कुमार जोशी	42-46
	राजस्थान का वर्तमान लोक संगीत	किरण डाँगी	47-51
	संख्या और स्वर का सामंजस्य-संगीत एवं गणित का सम्बन्ध	डॉ. पूनम शर्मा	52-56
	संगीत और संस्कृत का घनिष्ट संबंध	दलेर कौर	57-59
	आधुनिक भारतीय रंगमंचमेंसंगीत की भूमिका नाट्य शास्त्र परंपरा की निरंतरता	डॉ. मनीष बोहरे संगीत श्रीवास्तव	60-62
	संगीत में लय और लयकारी	प्रियेश कुमार पाण्डेय	63-69
	आधुनिक प्रस्तुतीकरण मेंतकनीक एवं नवाचार का प्रभाव	हनी राजोरिया डॉ. यक्षिता भट्ट	70-72
	शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतीकरण का बदलता स्वरूप:प्राचीन से वर्तमान तक	अखिलेश अहिरवार स्व. प्रो. डॉ. रंजना टोणपे	73-76
	परंपरागत शैली तथा नवाचार के प्रयोगों के माध्यम से ताल वाद्य यंत्रों की संगीत में भूमिका	विभा सिंह	77-79
	‘संगीत संकटमोचन है’(संगीत तथा अन्य विषयों का अंतः संबंध)	डॉ. यतीन कुमार चौबीसा	80-83
	तबला वादन के निहित सौंदर्य (लय, गणितीय, नाद, निकास सौंदर्य तत्वोका परस्पर संबंध)	श्रीपाद प्रदीप शिरवल कर	84-87
	आधुनिक संस्थाओं में संगीत शिक्षण की समस्याएँ	दीपक कुमार द्विवेदी	88-89

		प्रो (डा०) रुचिमिता पाण्डे	
	हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित आधुनिक घरानों की उपयोगिताएँ	एकता मिश्रा प्रो० डा० रुचिमिता पाण्डे	90-92
	किराना घराना : एक समग्र अध्ययन	श्री. किरण प्रकाश सावंत	93-95
	संगीत विषय का अन्य विषयों के साथ सह-सम्बन्ध	लोकेश कुमार जोशी	96-100
	एकल तबलावादन का विभिन्न घरानों में प्रस्तुति का स्वरूप.	प्रो.रोहित कुलकर्णी	101-103
	संगीत एवं चिकित्सा का अंतः संबंध	निशा यादव /डॉ कावेरी त्रिपाठी	104-106
	शास्त्रीय तबला एकल वादन का विकास एवं इसका आधुनिक स्वरूप	डॉ.मुकुन्द सिंह ठाकुर	107-109
	तंत्री वाद्यों में रस एवं सौन्दर्य के आधुनिक तत्व	डॉ. भगवंत कौर	110-112
	संगीत शिक्षण एवं प्रस्तुतिकरण का विकासात्मक स्वरूप	रेशमा कुमारी	113-118
	संगीत में रस के तत्व (सांगीतिक प्रस्तुतिकरण पर सौंदर्यात्मक प्रभाव के संदर्भ में)	डॉ. मनोज कुमार	119-122
	संगीत एवं द न भ्रास्त्र (पुरुशार्थ चतुष्टय) : इतिहास के झरोखे से	डॉ. अलका सिंह	123-128
	प्रस्तुतीकरण पर वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव	प्रज्ञा सिंह	129-132
	भारतीय संगीत के इतिहास में मध्य प्रदेश के घराने एवं उनके प्रस्तुतीकरण का आधुनिक स्वरूप गायन के विशेष संदर्भ में	डॉ. संगीता राय	133-137
	संगीत का अन्य विषयों से संबंध	किरण डाँगी	138-143

सांगीतिक प्रस्तुतिकरण में साहित्य एवं भाषा का योगदान (राग की बंदिशों के परिप्रेक्ष्य में)	दीप्ति उप्रेती / प्रो. किन्शुक श्रीवास्तव	144-147
संगीत का अन्य विषयों से संबंध	प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख	148-150
संगीत एवं दर्शन शास्त्र (पुरुषार्थ चतुष्टय) : इतिहास के झरोखे से	डा० अलका सिंह	151-155
तबला वाद्य एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्याम सुन्दर नागर	156-159
संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम	डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके	160-164
संगीत की गायन विधा राग के प्रस्तुतीकरण में सौन्दर्यात्मक प्रभावों का रहस्य	पूर्ति जैन / संतोश कुमार पाठक	165-169
प्रस्तुतिकरण पर वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव	ऋतु भारद्वाज	170-172
कथक नृत्य के प्रस्तुतीकरण में तकनीक एवं नवाचार का प्रयोग	डॉ. अपर्णा चाचोंदिया	173-176
ललितकलाओं का अंतःसंबंध	डॉ. अर्चना द्विवेदी	177-183
शास्त्रीय संगीत में प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप	अभिषेक कुमार मिश्रा	184-185
तबला में गायन, वादन एवं नृत्य संगत	डॉ. विभूति मलिक	186-189
सितार वादन शैली पर विभिन्न गायन शैलियों का प्रभाव	डॉ० सुमित्रा देवी चौहान	190-192
आधुनिक समय में पं. सतीश चन्द्र श्रीवास्तव का सितार वादन के क्षेत्र में योगदान	शाईना, डॉ. अमिता शर्मा	193-195
ख्याल की बंदिशों में प्रयुक्त कथक नृत्य शैली के भावप्रदर्शन तत्व :- अष्टनायिका	श्री राजेश नरसिंग बोडे	196-199
हारमोनियम एकल वादन के बदलते प्रवाह एवं आधुनिक स्वरूप	डा. प्रवीण कासलीकर	200-202
पटियाला और भेंडीबजार घरानों की निर्मिती एवं स्वरूप	डॉ. दिपाली चंद्रकांत पांडे	203-207

सांगीतिक प्रस्तुतिकरण में साहित्य एवं भाषा का योगदान (राग की बंदिशों के परिपेक्ष्य में)	प्रो. किन्शुक श्रीवास्तव दीप्ति उप्रेती	208-211
संगीत प्रस्तुतीकरण का आम श्रोताओं पर प्रभाव	ऋचा देशपांडे डॉ. अविराज तायडे	212-215
“कथक नृत्य के प्रस्तुति करण में आधुनिकता का प्रभाव : प्रस्तुतिक्रम के पररपेक्ष्य में”	स्वाति यादव	216-220
भारतीय आध्यात्मिक संगीत और प्रार्थनाओं की रचनाओं में सन्निहित वैज्ञानिकता—मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	डॉ. देवकीनंदन शर्मा	221-225
संगीत और अवग्रह	डॉ राहुल स्वर्णकार	226-229
गज़लों के प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम	डॉ.अवधेश प्रताप सिंह तोमर	230-232
तबला वादन और तकनीक	डॉ. हरिओम सोनी	233-237
प्रस्तुतीकरण पर वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव—	डॉ. इंद्रेश मिश्रा	238-243
आदिकाव्य रामायण में उल्लेखित संगीत संदर्भों की प्रासंगिकता (एक अध्ययन)	आकाश जैन डॉ राहुल स्वर्णकार	244-251
भारतीय संगीत में तबला संगत —एक विवेचन	शैलेन्द्र सिंह राजपूत	252-254
तबला स्वतंत्र वादन में कायदा का महत्व	गगन राज डॉ राहुल स्वर्णकार	255-259
आधुनिक तबला एकल प्रस्तुतिकरण में तकनीक एवं नवाचार का प्रभाव	अंशुल कुमार	260-262
आधुनिक तबला वादन शैली पर अन्य अवनद्य वाद्यों का प्रभाव	सोनल ताम्रकार	263-264
अवनद्य वाद्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	तेजस पटेल डॉ राहुल स्वर्णकार	265-269
सांगीतिक प्रस्तुतीकरण में रागदारी का श्रोताओं पर प्रभाव	मनीश सोनी	270-274
सांगीतिक मंच प्रस्तुतीकरण पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव	मयंक विश्वकर्मा डॉ राहुल स्वर्णकार	275-277
संगीत एवं अन्य विषयों का अंतः संबंध	तृप्ति सेन	278-283
From Sattria to Stage: The classical Dance Sattriya is adapting new format of presentation to suit the Modern proscenium	Dr. Devika Borthakur	284-288
Navigating Tradition and Change: Piecing Together Indian Classical Music's Creative	Subhadip Das	289-295

	Tapestry		
	Borgeet-An ancient singing form of Assam	Jyotishman Borah	296–298
	INFLUENCE OF VARIOUS STYLES IN SOLO [HARMONIUM] RECITAL PRESENTATION	Aditi Garade / Dr.Sheetal More	299–303
	ROLE OF AUDIENCE IN PERFORMING ARTS IN INDIAN TRADITION	SANTOSH KUMAR PANDA	304–306
	Impact of Music on Mental Health	Dr. Vishal Vijay Korde	307–309
	Concerts at Sri Bhaini Sahib: A Tribute to Musical Legacy	Gurdeep Singh Sandhu	310–313
	ANINTRODUCTION TO THE DANCE TRADITION OF SATTRIYA AND THE IMPORTANCE OF LEARNING THE TRADITION OF THE DANCE FORM.	BARNALI MAHANTA	314–316
	Aesthetic effects of Musical Presentation	Anu Saxena, / Prof Kaumudi Dattatry Kshirsagar	317–320
	The Perspectives and Condition of gharana in modern time: In the context of Tabla	Dr.Kedar Mukadam	321–324
	Classical Music and Its Influences on Bollywood Music Industry	Anu Bala	325–328
	Indian Classical Music:Historical perspective	Prof. Sharangdhar Sathe	329–331
	ENHANCEMENT OF PERFORMANCE BY ARTIFICIAL INTELLIGENCE	Ayurman Shrivastav	332–335
	EFFECT OF PRESENTATION ON GENERAL AUDIENCE	<i>Hitanshi Pamnani</i>	336–338
	The only classical dance form of Assam	SANKAR BARUAH	339–342
	Impact of Technology and Innovation in Modern Musical Presentation	Raj Jain	343–347

भारतीय आध्यात्मिक संगीत और प्रार्थनाओं की रचनाओं में सन्निहित वैज्ञानिकता-मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

डॉ. देवकीनन्दन शर्मा

अतिथि शिक्षक

मनोविज्ञान विभाग

डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर मध्य प्रदेश

संगीत मनोविज्ञान, या संगीत का मनोविज्ञान, मनोविज्ञान और संगीतशास्त्र दोनों की एक शाखा माना जा सकता है। इसका उद्देश्य संगीत व्यवहार और अनुभव को समझना और समझना है, जिसमें वे प्रक्रियाएँ भी शामिल हैं जिनके माध्यम से संगीत को समझा जाता है, बनाया जाता है, प्रतिक्रिया दी जाती है और रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल किया जाता है। आधुनिक संगीत मनोविज्ञान मुख्यतः अनुभवजन्य है इसका ज्ञान मानव प्रतिभागियों के साथ व्यवस्थित अवलोकन और बातचीत द्वारा एकत्र किए गए डेटा की व्याख्याओं के आधार पर आगे बढ़ता है। संगीत मनोविज्ञान कई क्षेत्रों के लिए व्यावहारिक प्रासंगिकता वाला अनुसंधान का क्षेत्र है, जिसमें संगीत प्रदर्शन, रचना, शिक्षा, आलोचना और चिकित्सा के साथ-साथ मानवीय दृष्टिकोण, कौशल, प्रदर्शन, बुद्धि, रचनात्मकता और सामाजिक व्यवहार की जांच भी शामिल है।

संगीत मनोविज्ञान संगीतशास्त्र और संगीत अभ्यास के गैर—मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर प्रकाश डाल सकता है। उदाहरण के लिए, यह माधुर्य, सामंजस्य, सुर, लय, मीटर और रूप जैसी संगीत संरचनाओं की धारणा और कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग की जांच के माध्यम से संगीत सिद्धांत में योगदान देता है। संगीत इतिहास में अनुसंधान संगीत वाक्यविन्यास के इतिहास के व्यवस्थित अध्ययन से, या संगीतकारों और रचनाओं के उनके संगीत के प्रति अवधारणात्मक, भावनात्मक और सामाजिक प्रतिक्रियाओं के संबंध में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से लाभान्वित हो सकता है।

धारणा और अनुभूति—संगीत मनोविज्ञान के भीतर बहुत से काम संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश करते हैं जो धारणा, समझ, स्मृति, ध्यान और प्रदर्शन सहित संगीत व्यवहार का समर्थन करते हैं। मूल रूप से मनोध्वनिकी और संवेदना के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले, लोग संगीत को कैसे समझते हैं इसके संज्ञानात्मक सिद्धांत हाल ही में तंत्रिका विज्ञान, संज्ञानात्मक विज्ञान, संगीत सिद्धांत, संगीत चिकित्सा, कंप्यूटर विज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन और भाषा विज्ञान को शामिल करते हैं।

संगीत और भावना—यह दिखाया गया है कि संगीत अपने श्रोताओं में लगातार भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करता है, और मानव प्रभाव और संगीत के बीच इस संबंध का गहराई से अध्ययन किया गया है। इसमें यह अलग करना शामिल है कि किसी संगीत कार्य या प्रदर्शन की कौन सी विशिष्ट विशेषताएँ कुछ प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करती हैं या उत्पन्न करती हैं, प्रतिक्रियाओं की प्रकृति स्वयं, और श्रोता की विशेषताएँ कैसे निर्धारित कर सकती हैं कि कौन सी भावनाएँ महसूस की जाती हैं। यह क्षेत्र दर्शनशास्त्र, संगीतशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र जैसे क्षेत्रों के साथ-साथ संगीत रचना और प्रदर्शन के कार्यों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। आकस्मिक श्रोताओं के लिए निहितार्थ भी बहुत अच्छे हैं शोध से पता चला है कि भावनात्मक संगीत से जुड़ी आनंददायक भावनाएँ स्ट्रिएटम में डोपामाइन रिलीज का परिणाम हैं — वही शारीरिक क्षेत्र जो नशीली दवाओं की लत के प्रत्याशित और पुरस्कृत पहलुओं को रेखांकित करते हैं। शोध के अनुसार, संगीत सुनने से व्यक्ति के मूड पर असर पड़ता है। यह उस व्यक्ति को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा या नहीं, इसके मुख्य कारक संगीत की गति और शैली पर आधारित हैं। इसके अलावा, संगीत सुनने से संज्ञानात्मक कार्य, रचनात्मकता भी बढ़ती है और थकान की भावना कम होती है। ये सभी कारक बेहतर वर्कफ्लो और संगीत सुनते समय की गई गतिविधि में अधिक इष्टतम परिणाम की ओर ले जाते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि किसी गतिविधि को करते

समय संगीत सुनना उत्पादकता और समग्र अनुभव को बढ़ाने का एक उत्कृष्ट तरीका है। यह प्रस्तावित किया गया है कि संगीत के भावनात्मक अर्थ को समझने की क्षमता आवाजोंध्वरों और संगीत ध्वनियों के भावनात्मक अर्थ को संसाधित करने के लिए एक सामान्य तंत्रिका तंत्र के अस्तित्व पर निर्भर हो सकती है। भावनात्मक प्रतिक्रियाओं के अलावा, संगीत ने व्यक्तियों की जीवनशैली को प्रभावित किया है और प्सेक्सीफ़ क्या है, इसके बारे में लोगों की धारणा बदल दी है। हालाँकि संगीत मनुष्य की सभी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है, लेकिन भावनाओं और भावनाओं को बदलने के लिए इस पर बहुत अधिक भरोसा किया जाता है।

संगीत का संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान

शोध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा संगीत धारणा और प्रदर्शन के अंतर्निहित संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में शामिल मस्तिष्क-आधारित तंत्र से संबंधित है। इन व्यवहारों में संगीत सुनना, प्रदर्शन करना, रचना करना, पढ़ना, लिखना और सहायक गतिविधियाँ शामिल हैं। यह संगीत सौंदर्यशास्त्र और संगीत भावना के लिए मस्तिष्क के आधार से भी चिंतित है। इस क्षेत्र में काम करने वाले वैज्ञानिक संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान, तंत्रिका विज्ञान, न्यूरोएनाटॉमी, मनोविज्ञान, संगीत सिद्धांत, कंप्यूटर विज्ञान और अन्य संबद्ध क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं, और कार्यात्मक चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एफएमआरआई), ट्रांसक्रानियल चुंबकीय उत्तेजना (टीएमएस), मैग्नेटोएन्सेफेलोग्राफी जैसी तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं। (एमईजी), इलेक्ट्रोएन्सेफेलोग्राफी (ईईजी), और पॉजिट्रॉन एमिशन टोमोग्राफी (पीईटी)। संगीत प्रदर्शन की संज्ञानात्मक प्रक्रिया के लिए मोटर और श्रवण प्रणालियों दोनों में तंत्रिका तंत्र की बातचीत की आवश्यकता होती है। चूँकि प्रदर्शन में व्यक्त की गई प्रत्येक क्रिया एक ध्वनि उत्पन्न करती है जो बाद की अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है, इससे प्रभावशाली सेंसरिमोटर इंटरप्ले होता है।

संगीत अनुभूति में संस्कृति

किसी व्यक्ति की संस्कृति या जातीयता उनके संगीत संज्ञान में एक भूमिका निभाती है, जिसमें उनकी प्राथमिकताएँ, भावनात्मक प्रतिक्रिया और संगीत स्मृति शामिल हैं। संगीत की प्राथमिकताएँ बचपन से शुरू होने वाली सांस्कृतिक रूप से परिचित संगीत परंपराओं के प्रति पक्षपाती होती हैं, और वयस्कों द्वारा संगीत के टुकड़े की भावना का वर्गीकरण सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट और सार्वभौमिक संरचनात्मक विशेषताओं दोनों पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक रूप से अपरिचित संगीत की तुलना में सांस्कृतिक रूप से परिचित संगीत के लिए व्यक्तियों की संगीत स्मृति क्षमता अधिक होती है। समाज में संगीत, संगीत अनुष्ठान और सभाएँ (जैसे धार्मिक, उत्सव, खेल, राजनीतिक, आदि), व्यक्तिगत और समूह पहचान बनाने में संगीत की भूमिका, संगीत और नृत्य के बीच संबंध, संगीत की पसंद पर सामाजिक प्रभाव (साथी, परिवार, विशेषज्ञ, सामाजिक पृष्ठभूमि, आदि)

संगीत की प्राथमिकता

संगीत में उपभोक्ताओं की पसंद का अध्ययन किया गया है क्योंकि वे पांच बड़े व्यक्तित्व लक्षणों से संबंधित हैं: अनुभव के प्रति खुलापन, सहमतता, बहिर्मुखता, विक्षिप्तता और कर्तव्यनिष्ठा। सामान्य तौर पर, अनुभव के प्रति खुलापन और बहिर्मुखता, स्थिरता गुणों (सहजता, मनोविक्षुब्धता और कर्तव्यनिष्ठा) की तुलना में संगीत की पसंद को अधिक प्रभावित करते हैं। यह दिखाया गया है कि लिंग वरीयता को प्रभावित करता है, पुरुष मुख्य रूप से संज्ञानात्मक कारणों से संगीत चुनते हैं, और महिलाएँ भावनात्मक कारणों से संगीत की पसंद का संबंध मनोदशा और पुरानी यादों से जुड़ाव के साथ भी पाया गया है।

संगीत योग्यता

संगीत संबंधी योग्यता किसी व्यक्ति की संगीत गतिविधि के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्राप्त करने की जन्मजात क्षमता को संदर्भित करती है, और यह उस गति को प्रभावित कर सकती है जिस पर सीखना हो सकता है और जिस स्तर को प्राप्त किया जा सकता है। इस क्षेत्र में अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि क्या योग्यता को उप-समूहों में विभाजित किया जा सकता है

या एक एकल निर्माण के रूप में दर्शाया जा सकता है, क्या योग्यता को महत्वपूर्ण उपलब्धि से पहले मापा जा सकता है, क्या उच्च योग्यता उपलब्धि की भविष्यवाणी कर सकती है, किस हद तक योग्यता विरासत में मिली है, और योग्यता के प्रश्नों का क्या अर्थ है शैक्षिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। यह बुद्धिमत्ता और आईक्यू से निकटता से जुड़ा हुआ मुद्दा है, और कार्ल सीशोर के काम से इसकी शुरुआत हुई थी। जबकि योग्यता के प्रारंभिक परीक्षण, जैसे कि सीशोर की द मेजरमेंट ऑफ म्यूजिकल टैलेंट, ने पिच, अंतराल, लय, व्यंजन, स्मृति इत्यादि के भेदभाव परीक्षणों के माध्यम से जन्मजात संगीत प्रतिभा को मापने की मांग की, बाद के शोध में पाया गया कि इन तरीकों में बहुत कम पूर्वानुमान शक्ति है और परीक्षा देते समय परीक्षार्थी की मनोदशा, प्रेरणा, आत्मविश्वास, थकान और बोरियत से बहुत प्रभावित होना चाहिए।

संगीत और स्वास्थ्य

वैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि गायन से लोगों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। कोरल गायन में भाग लेने वाले छात्रों के एक सर्वेक्षण से स्व-रिपोर्ट किए गए डेटा के आधार पर एक प्रारंभिक अध्ययन में फेफड़ों की क्षमता में वृद्धि, मनोदशा में सुधार, तनाव में कमी के साथ-साथ कथित सामाजिक और आध्यात्मिक लाभों सहित कथित लाभ पाए गए। हालाँकि, फेफड़ों की क्षमता के एक बहुत पुराने अध्ययन ने उन लोगों की तुलना की जिनके पास पेशेवर स्वर प्रशिक्षण नहीं है, और फेफड़ों की क्षमता में वृद्धि के दावों का समर्थन करने में विफल रहा। गायन तनाव को कम करके प्रतिरक्षा प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। एक अध्ययन में पाया गया कि गाना और कोरल संगीत सुनना दोनों ही तनाव हार्मोन के स्तर को कम करते हैं और प्रतिरक्षा कार्य को बढ़ाते हैं। गायन और स्वास्थ्य के बीच संबंध का अध्ययन करने के लिए 2009 में एक बहुराष्ट्रीय सहयोग स्थापित किया गया, जिसे एडवांसिंग इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च इन सिंगिंग (एआईआरएस) कहा जाता है। गायन प्रतिभागियों को शारीरिक, संज्ञानात्मक और भावनात्मक लाभ प्रदान करता है। जब वे मंच पर कदम रखते हैं, तो कई गायक अपनी चिंताओं को भूल जाते हैं और केवल गाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। गायन किसी व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ाने का एक अधिक व्यापक रूप से ज्ञात तरीका बनता जा रहा है, जिससे उन्हें तनाव कम होने, एंडोर्फिन जारी होने और फेफड़ों की क्षमता में वृद्धि के कारण कैंसर जैसी बीमारियों से अधिक प्रभावी ढंग से लड़ने में मदद मिलती है।

मस्तिष्क पर प्रभाव

जॉन डैनियल स्कॉट, अन्य लोगों के बीच, ने उद्धृत किया है कि प्जो लोग गाते हैं उनके खुश होने की संभावना अधिक होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्नायन न्यूरोट्रांसमीटर के स्तर को बढ़ाता है जो आनंद और कल्याण से जुड़ा होता है। मनुष्य के पास संगीत, विशेषकर गायन का एक लंबा इतिहास है यह अनुमान लगाया जाता है कि संगीत का उपयोग सामाजिक जुड़ाव के प्रारंभिक रूप में भी किया जाता था। जैसा कि सैवेज एट अल ने कहा है। (2020), गीतों का उपयोग व्यक्तियों के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक संबंध की पहचान करने के लिए भी किया जाता था, क्योंकि गाने आम तौर पर भिन्न होते हैं। यदि दो लोग एक ही गाना जानते हैं, तो संभवतः उनका पिछली पीढ़ियों से संबंध होगा, क्योंकि गाना अक्सर अधिक यादगार होता है। सैवेज एट अल. यह साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए जारी है कि संगीत या गायन भाषा से भी पहले मनुष्यों में विकसित हुआ होगा। इसके अलावा, लेविटिन ने अपने दिस इज योर ब्रेन ऑन म्यूजिक में तर्क दिया है कि संगीत वह गतिविधि हो सकती है जिसने हमारे पूर्व-मानव पूर्वजों को भाषण संचार के लिए तैयार किया है और प्नायन ... ने हमारी प्रजातियों को मोटर कौशल को निखारने में मदद की होगी, स्वर...वाणी के लिए आवश्यक उत्कृष्ट मांसपेशीय नियंत्रण के विकास का मार्ग (दूसरी ओर, वह पिकर का हवाला देते हैं, जिन्होंने तर्क दिया कि भाषा एक अनुकूलन है और संगीत उसका स्पैन्डेल है ... भाषा पर आधारित एक विकासवादी दुर्घटना। अध्ययनों में ऐसे प्रमाण मिले हैं जो गायन के मानसिक और शारीरिक लाभों का सुझाव देते हैं। एक वर्ष में तीन अलग-अलग

बिंदुओं पर गायक मंडल के 21 सदस्यों के साथ एक अध्ययन करते समय, तीन विषयों ने लाभ के तीन क्षेत्रों का सुझाव दिया—सामाजिक प्रभाव (दूसरों के साथ जुड़ाव), व्यक्तिगत प्रभाव (सकारात्मक भावनाएँ, आत्म-धारणा, आदि), और कार्यात्मक परिणाम (गाना बजानेवालों में होने के स्वास्थ्य लाभ)। निष्कर्षों से पता चला कि गायन के साथ भलाई की भावना जुड़ी होती है, जो प्रतिभागियों के मूड को बेहतर बनाती है और मस्तिष्क में एंडोर्फिन जारी करती है। कई गायकों ने यह भी बताया कि गायन से उन्हें तनाव को नियंत्रित करने और आराम करने में मदद मिली, जिससे उन्हें अपने दैनिक जीवन से बेहतर ढंग से निपटने में मदद मिली। सामाजिक दृष्टिकोण से, दर्शकों से अनुमोदन और अन्य गायन सदस्यों के साथ सकारात्मक तरीके से बातचीत करना भी फायदेमंद है। गर्भवती माताओं के लिए गाना फायदेमंद होता है। अपने नवजात शिशुओं के साथ संचार का एक और माध्यम देकर, एक अध्ययन में माताओं ने अपने अजन्मे बच्चों के लिए गाते समय प्यार और स्नेह की भावनाओं की सूचना दी। उन्होंने अपनी तनावपूर्ण गर्भावस्था के दौरान पहले से कहीं अधिक आराम महसूस करने की भी सूचना दी। एक गीत एक गायक को अतीत की याद दिलाकर पुरानी यादों को ताजा कर सकता है, और उन्हें क्षण भर के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे उन्हें गायन पर ध्यान केंद्रित करने और अपने दैनिक जीवन और समस्याओं से मुक्ति के रूप में गतिविधि को अपनाने की अनुमति मिलती है।

शारीरिक लाभ

- फेफड़ों को काम करता है, इंटरकोस्टल और डायफ्राम को टोन करता है।
- नींद में सुधार लाता है
- एरोबिक क्षमता में सुधार करके कार्डियो फंक्शन को लाभ पहुंचाता है
- समग्र मांसपेशी तनाव में आराम मिलता है
- मुद्रा में सुधार लाता है।
- साइनस और श्वसन नलिकाओं को खोलता है
- प्रशिक्षण से खर्राटों को कम करने में मदद मिल सकती है
- एंडोर्फिन जारी करता है
- प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देता है
- पार्किंसंस रोग जैसी बीमारियों से प्रभावित लोगों में शारीरिक संतुलन को बेहतर बनाने में मदद करता है।

अन्य अवधारणाएँ:

संगीत चिकित्सा और संगीत और नींदस्वास्थ्य देखभाल और चिकित्सीय सेटिंग्स में संगीत की प्रभावशीलता, संगीत-विशिष्ट विकार, संगीतकारों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण, संगीत प्रदर्शन चिंता या मंच भय, संगीतकारों के बीच प्रेरणा, जलन और अवसाद, संगीतकारों में शोर-प्रेरित श्रवण हानि, नींद की शुरुआत और रखरखाव अनिद्रा ध्यान संबंधी जांच के रूप में संगीत का तात्पर्य संगीत के अस्तित्ववादी, रचनात्मक और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य से है। यह संगीत सीखने और अनुभव करने में स्वतंत्रता, आंतरिक बुद्धिमत्ता, स्वतंत्रता और मौलिकता के महत्व को रेखांकित करता है और उसका जश्न मनाता है। ध्यान संबंधी जिज्ञासा के रूप में संगीत भारतीय कार्य की मेरी खोज में निहित है, हर किसी का संगीत के साथ एक अनोखा जीवन इतिहास होता है, और मुझे आपमें दिलचस्पी है। आप भारतीय शास्त्रीय संगीत की ओर कैसे आये? माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका केवल पढ़ाना नहीं है, बल्कि बच्चों के साथ जुड़कर यह पता लगाना है कि उनकी क्षमता क्या हो सकती है और उन्हें अपनी क्षमता बढ़ाने के अवसर प्रदान करना है।

Reference:-

Biley F.C. (1999). Music as Therapy: A Brief History. Contemporary Therapy in Nursing and Midwifery, 5, 140-

143. Bruscia, K.E., & Gilsum, N.H. (1998). Defining Music Therapy. Barcelona (Google Scholar)
- Cherry, K. (2019). How Listening to Music Can have Psychological Benefit. Verywellmind.
<https://www.verywellmind.com/surprising-psychological-benefits-of-music-4126866#>
- Deva, V.C. & Virmani, K.G. (1988). Meaning of Music: An Empirical Study of Psychological Responses to Indian Music. *Sangeet Natak*, 10, 54-63.
- Dobrzynska, Ewelina., Cesarz, Helelna., Rymas, Zewska., Joanna., & kiejna, Andrzej. (2006). Music Therapy- History, Defini ons and Applica on. *Archives of Psychiatry and Psychotherapy*, 8, 47-52
- D'Errico, F., Henshilwood, C., Lawson, G., Vanhaeren, M., Tillier, A.M., Soressi, M., (2003). Archeological Evidence for the Emergence of Language, Symbolism and Music – An Alterna ve Mul disciplinary Perspective. *Journal of World Pre-History*, 17, 1-70 Gold,
- C., Voracek, M., & Wigram, T. (2004). Effect of Music Therapy for Children and Adolescents with Psychopathology: a Meta-analysis. *Journal of Child Psychology and Psychiatry*, 45(6), 1054-1063
- Hegde, S. (2017). Music Therapy for Mental Disorder and Mental Health: The Untapped Poten al of Indian Classical Music. *The Bri sh journal of Psychiatry*, 14(2), 31-33,